अटेंशन रख करके अपना जीवन बनाना है। पहले तो अपनी कोशिश करनी चाहिए कि हम अपना तो जीवन बनाएँ। ऐसे नहीं (कि) अपना जीवन बनाया नहीं, दूसरे के लिए मेहनत करते रहें। वो तो ठीक नहीं रहता है। अपने जीवन को अच्छी तरह से बनाना चाहिए; क्योंकि जो अपनी जीवन को अच्छी तरह से बनाते हैं उनको खुशी का पारा अच्छा चढ़ता है; क्योंकि याद करते रहते हैं और समझते रहते हैं कि मैं जो इतना याद करता हूँ या औरों को भी रास्ता बताता हूँ, मुझे पद ज़रूर ऊँचा मिलेगा। ये तो कोई भी स्कूल का स्टूडेण्ट होवे, अच्छी तरह से सब्जेक्ट्स में पढ़ता होगा तो समझता तो होगा ना और मैनर्स वाले भी होते हैं– कोई से लड़ना–झगड़ना, धक्का खाना, यह करना, झूठ बोलना, चोरी करना या फलाना। ऐसे भी तो ढेर बच्चे होते हैं। कोई के तो अच्छे मैनर्स होते हैं। दुनिया तो सारी ही बरोबर घोर अंधियारे में है। भले कितना उनका तूमान है। सो भी ये पिछाड़ी का तूमान है, इससे इन बिचारों का कोई जीवन तो नहीं बनना है।... जो अच्छे–समझदार ब्राह्मण हैं वो तो समझेंगे– क्या है देखो, ये कितने बड़े आदमी हैं! हाँ, एक बड़ी बात ये लगती है कि बाप को नहीं जानते हैं! देखो, आगे बाप को नहीं जानते थे तो ऐसे नहीं समझना, भले पैसे भी होते हैं तो कोई दुःख नहीं होता है। अरे नहीं, दुःख होता है, बीमारी होती है, कोई मरता है तो रड़ना पड़ता है। कोई टैक्स आया, इनकम टैक्स आया, फलाया आया, दो–2/तीन–2 रोज़ नींद नहीं आवे। कोई पैसा नहीं दिया, कोई उधार लेकर डूब गया। होता तो है ना। ऐसे मत समझना कोई कि भले धंधे में किसका फायदा होवे तो भी कुछ न कुछ आफतें आती रहती हैं। डेवाला मारा, आज फलाना किया, आज कोई मरा। इन सब बातों में यहाँ जो बच्चों को ज्ञान मिला हुआ है इनको तो बड़ी खुशी होनी चाहिए, सिर्फ एक ही कि हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं और शिवबाबा हमको स्वर्ग का वर्सा देते हैं, विश्व का मालिक बनाते हैं। तो देखो, ये खुशी रहे ना। याद कोई भी करते रहें तो बड़ी खुशी रहे। पीछे ये झंझट, ये सब लड़ना–झगड़ना वो ख्याल से निकल जावे; परन्तु ये नहीं होता है तो फिर अच्छे–2 महारथी भी आपस में फुटकते रहते हैं, झगड़ते रहते हैं, ये करते रहते हैं, वो करते रहते हैं। तो उनकी बुद्धि में कोई खुशी नहीं रहती है। मैंने देखा कि ये करनाल वाली सर्विस में अच्छी रहती है। भले इनके पास ऐसे चरिये–खरिये बच्चे हैं, मत्थे खपाने वाले; परन्तु सर्विस का शौक अच्छा है। वो जो अमृतसर वाली है उनको अच्छा है। (किसी ने कहा– अचल) अचल में शौक अच्छा है। आजकल वीणानगर में ये जो लक्ष्मी है उनको अच्छा शौक है और कुछ रिफाइन भी है।... अपना सेन्टर छोड़कर बाहर में इतनी सर्विस कर न सके। कई बच्चे हैं जो अपनी भी सर्विस करें, बाहर की भी सर्विस कर सकें। ऐसे भी हैं। जो करते हैं वो अपने लिए कल्याण करते हैं। बाबा–2 करके भी समझाया अभी तो हमको बेहद के बाबा का वर्सा मिल रहा है; क्योंकि बेहद का बाबा तो स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं अभी तो वो ब्रह्मा द्वारा। रथ तो उनको चाहिए ही और यहाँ तो सीधा लगा हुआ है कि ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं तो ज़रूर राजयोग पढ़ाएँगे। ये समझना तो सहज है ना कि ब्रह्मा द्वारा ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तो राजयोग सिखलाएँगे ज़रूर स्वर्ग के लिए, राजा बनने के लिए। हम तो बाबा–2 करते रहें– शिवबाबा से हम वर्सा ले रहे हैं कि बेहद का बाबा है और वर्सा हमको बड़ा सहज देते हैं। कहते ही हैं कि बच्चे, मुझे याद करो और वर्से को याद करो। ये भी क्यों कहते हैं मुझे याद करो? वर्सा तो मिलना ही चाहिए ना जबकि हम शिवबाबा के हैं। तो हमको वर्सा मिलना चाहिए; परन्तु नहीं मिल सकता है। इसीलिए बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम पवित्र हो जाओ। इसलिए कहते हैं कि याद करो; क्योंकि निराकार को याद करना, देही–अभिमानी हो करके घड़ी–2 याद करना, इसमें मेहनत है। तो कोई को भी ये समझाते तो रहना है ना; क्योंकि ढिंढोरा पिटना ही है। माने या न माने। ये आगे भी ऐसे गाया हुआ है– निमंत्रण देना है और बाबा–2 करके। बहुत मीठा अक्षर है। शिवबाबा से हम अभी वर्सा ले रहे हैं। शिवबाबा तो स्वर्ग की स्थापना करते हैं और वही कहते हैं

कि मुझे याद करो तो तुम्हारा विकर्म विनाश होगा। तुम मालिक बन जाएँगे। ये भी अच्छा। तो आपे ही पीछे उनको अच्छा लगेगा तो दूसरे को भी ऐसे कहेंगे। ये भी तो मंत्र देते हैं ना। दूसरे लोग भी मंत्र देते हैं। उनकी एम–ऑब्जेक्ट तो कोई है नहीं। तुम्हारी तो एम–ऑब्जेक्ट है कि बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम विश्व का मालिक बनेंगे। अभी सन्यासी मंत्र दे करके कहते कुछ भी नहीं हैं कि तुमको ये मिलेगा या क्या मिलेगा। ये तो तुम समझाएँगे ना कि शिवबाबा को कहेंगे, बाबा है ना। बस, बाबा माना ही वर्सा ज़रूर। तुम सन्यासी को, गुरू को बाबा नहीं कहेंगे और अगर दूसरे कोई को भी तुम बाबा–बाबा कहेंगे तो आर्टीफिशल हो जाएगा। जैसे बापू गाँधी जी को बापू कह देते हैं। ये आर्टीफिशल है। सचमुच नहीं है। वो मेयर को बापू कह देते हैं। वो भी फादर कह देते हैं। वो सभी रॉंग है। ये तो राइट है। बरोबर आत्मा का बाप वो और दूसरा जिस्मानी लौकिक बाप होता ही है। तो अभी जिस्मानी बाप कहते हैं। उनके तो सभी बच्चे ठहरे। उन सबको कहते हैं (कि) तुम मुझे याद करो। भक्तिमार्ग में याद तो करते हैं, अभी मैं स्वयं कहता हूँ कि मुझे याद करो, तुम्हारा विकर्म विनाश होगा; क्योंकि इस बात को दूसरा कोई जानते ही नहीं हैं। मैं जब खुद आकर कहता हूँ कि मुझे याद करो, मैं तुम्हारा बाबा हूँ। कृष्ण तुम्हारा बाबा नहीं है। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर वास्तव में तुम्हारा बाबा नहीं है; क्योंकि सबका नहीं है। सबका तो वो एक निराकार है; क्योंकि उनसे ही मिलना है। कोई ब्रह्मा को हैविनली गॉड फादर नहीं कहेंगे या स्वर्ग की स्थापना ; क्योंकि वो बड़ा है। वर्सा भी उनसे मिलता है। तो उनको यही कहना है– 'शिवबाबा' अक्षर बहुत अच्छा–मीठा कि बेहद का शिवबाबा जो स्वर्ग रचते हैं वो कहते हैं मुझे याद करो तो पवित्र हो जाएँगे। पवित्र हो जाएँगे तो फिर पवित्र दुनिया का मालिक बन जाएँगे। ये भी अच्छा तो है ना। पवित्र रहें और याद करें, ये भी अच्छा, बहुत अच्छा। बहुत मददगार रहेंगे। दो अक्षर, तीन अक्षर सहज करना होता है और याद भी करते हैं। बोलो– जब वो लौकिक बाप है, उनसे तो ये वर्सा मिलता ही है, फिर भी तुम उनको याद करते हो दुःख में। तो फिर मिलना होगा और ये तो बाबा है सो स्वर्ग की रचना है, तो ज़रूर ये देवी–देवताओं को वर्सा मिला है ना। तो कैसे मिला है, बाबा बताते हैं ना कि याद करो तो तुमको विकर्म विनाश हो जाएगा। तो ज़रूर मुक्तिधाम में तो जाएँगे ना। पीछे ये नॉलेज को याद करते हैं तो मुक्ति मिले तो भी क्या, अहो सौभाग्य! कितना मत्था मारते हैं, धक्का खाते हैं। ...समझते हैं अच्छी तरह से कि ये...हुई बात है, तो कोई को बताते भी रहें। है पिछाड़ी में। ...यहाँ बच्चों को सहज भी है। बाप के आगे रोज़ बैठ करके सुनते हैं और कोशिश करके जितना बाप को याद करें इतना अच्छा ही है। टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। वो जो गाया हुआ है– हियर नो ईविल, तो कोई भी फालतू बात करे तो उनकी सुननी नहीं चाहिए। नहीं तो बाबा कहते हैं– नहीं सुननी चाहिए। अगर सुनते रहते हैं तो उसका सौगुणा दण्ड भी पड़ता है; क्योंकि नाफरमानबरदार भी कहा जाता है। बाबा तो अच्छी बात बताते हैं ना कि कोई भी उल्टी–सुल्टी बातें सुनो और सुनाओ नहीं। ये धंधा छोड़ दो। तुम्हारा कल्याण है इनमें। ...ज़रूर करना है। ये कल्प–2 का कल्याण है। अभी कैसे भी करके अपने ऊपर तरस खाना है ज़रूर। ये कृपा कोई बाप की नहीं होती है, आशीर्वाद नहीं मिलती है। यहाँ तो अपने ऊपर कृपा करनी है डायरेक्शन्स पर चलकर। अभी जो चलेगा वो अपना कल्याण कर लेंगे, नहीं तो मुफ्त अपना अकल्याण ही कर देंगे। (म्युज़िक बजा) मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का याद–प्यार और गुडनाइट।